lxhrkRed ^dFkd&cksy* 'kSyh dk fo'ys"k.kkRed v/;;u

n;kyckx ,tqds'kuy bULVhV~;wV ¼MhEM fo'ofo|ky;½

n;kyckx] vkxjk ls laxhr esa ih,p0 Mh0

dh

mikf/k gsrq çLrqr

çLrkfor 'kks/k&çcU/k dh :ijs[kk

'kks/k&funsZf'kdk % प्रो० सुधा सहगल संगीत–विभाग (गायन)

'kks/kdf=h : इशिता भटनागर

dyk&ladk; ¼laxhr&foHkkx½

n;kyckx ,tqds'kuy bULVhV~;wV ¼MhEM fo'ofo|ky;½

n;kyckx] vkxjk& 282005

2020

Hkfedk

dFkd&cSy एक ऐसी समूह नृत्य शैली है जिसमें भारतीय एवं पाश्चात्य संगीतात्मक तत्वों का सृजनात्मक सम्मिश्रण अत्यन्त कलापूर्ण रीति से किया जाता है। इस नृत्य शैली की द्विसांस्कृतिक संगीतात्मक व नाट्यात्मक रचनाधर्मिता न केवल भारतवर्ष, अपितु विश्व में कीर्तिमान स्थापित कर रही हैं। dFkd&cSy! समूह नृत्य शैली में प्रयुक्त संगीतात्मक तत्त्वों के साथ–साथ नाट्य कला व साहित्य कला इतनी प्रबल है जिन्होंने कथक को नवीन दिशा प्रदान कर भारतीय व पाश्चात्य संस्कृतियों को एक सूत्र में बांध दिया।

इस समूह नृत्य शैली में कथक के एकल नृत्य से समूह नृत्य तक, मुद्रा संचालन, पद संचालन, भाव–सम्प्रेषण का योगदान है तथा भारतीय सांगीतिक राग–प्रधान रचनाएं, गायन शैलियाँ, वाद्य–प्रयोग इसे और अधिक प्रभावशाली निर्मित कर देते हैं व पाश्चात्य बैले की कलात्मक प्रविधियां, आकर्षक मुद्राएं, अधः पद मुद्रा, समृद्ध वाद्यवृन्द, ऑपेराजन्य प्रभाव तथा उचित मंचसज्जा जैसे तत्त्व इस शैली में सोने पर सुहागा का कार्य करते हैं। नाट्य कला के साहित्यिक पक्ष कथा के रूप में इस समूह नृत्य को जीवन्त करते हुए सहगामी भारतीय पारम्परिक परिधान व सुरूचिपूर्ण श्रृंगार तो इसे अविस्मरणीय बना देते हैं।

संस्कृतिजन्य प्रभाव तथा समय के परिवर्तनशील चक्र सदैव गतिमान रहते हैं तथा नवीन–संयोजन और कल्पनाशील विचार–बिन्दुओं का सम्मिश्रण नवीन कलाओं को जन्म देते हैं। जब इसका सम्मिश्रण कथक नृत्य में हुआ तो आधार तो यथावत् कथक का ही रहा तथा यह शैली बैले के समूह–प्रयोग व कथा–संयोजन के माध्यम से मंच पर चमत्कारपूर्ण रूप से अवतरित हुई। इसी संयोजन प्रधान समूह नृत्य के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य को यदि दृष्टिगत किया जाए तो ज्ञात होता है कि भारतीय समूह नृत्य का उल्लेख हज़ारों वर्षों पूर्व के समूह–नृत्यों से किया जा सकता है और लोक में व्याप्त रास–नृत्य का भी लगभग यही स्वरूप है किन्तु ßdFkd&cSyÞ इस शैली के अंतर्गत जो कारक विद्यमान हैं वे भारतीय व पाश्चात्य समरूपता के परिणाम हैं जैसे कथा–मंचन, नृत्य प्रविधियां, अंग संचालन, भ्रमरिकाएं, हस्तकोण मुद्राएं, अनुशासित अभ्यास एवं प्रस्तुतिकरण, मंचीय वाद्य–वृन्द, पारम्परिक/घराना शैलियाँ प्रमुख हैं।

अतः dFkd&cSys सदृश समूह नृत्य–शैली अपने आप में एक ऐसी रचनात्मकता का प्रस्फुटन है जिसमें द्विसांस्कृतिक मिश्रण, कथा–संयोजन व संचालन, कलापूर्ण नृत्य विन्यास, विविध रागप्रधान सांगीतिक रचनाएं, मंचीय कलात्मक वाद्य वृन्द–प्रयोग, भावपूर्ण भंगिमाएँ, उत्कृष्ट अंग व पद–संचालन तथा सुरुचिपूर्ण शृंगार व वेशभूषा सम्मोहन की भाँति प्रभाव छोड़ती है।

शोधकर्त्री का भी सम्मोहन भी इसी संगीतात्मक नृत्य शैली की ओर है तथा साथ ही साथ शोध की दृष्टि से कतिपय प्रश्न भी शोधकर्त्री के मस्तिष्क में उजागर हुए है जैसे –

1. "कथक एवं बैले" नृत्य शैलियों का इतिहास क्या है?
2. "कथक–बैले" शैली कब से अस्तित्व में आई?
3. कथक नृत्य शैली में बैले का कौन सा रूप मिश्रित किया गया?
4. बैले के सांगीतिक पक्ष को कितना कथक में ग्रहण किया गया है?
5. इस शैली में सांगीतिक रचनाओं का स्वरूप क्या है?
6. साहित्य से किस प्रकार की कथा का चयन होता है?
7. सांगीतिक संवादों को किस प्रकार निर्मित किया जाता है?
8. गायक एवं वादक वाद्य वृन्द रचनाओं में किस प्रकार सांगीतिक समन्वय करते हैं?
9. सांगीतिक रचनाओं के पार्श्व में रचना शैली के कौन से नियमों का पालन किया जाता है?

उपर्युक्त सभी सम्भावित प्रश्नों का उत्तर खोजने के लिए तथा प्रारम्भिक अध्ययन हेतु सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण भी किया गया जिसका वृहद् वर्णन इस प्रकार है –

lEcfU/kr lkfgR; dk losZ{k.k

iqLrdsa %&

- Indian Ballet Dancing – Projesh Banerjee; Shakti Malik Abhinav Publication New Delhi, 1983.
- कथक नृत्य शिक्षा – भाग 1 एवं 2 – डॉ पुरू दाधीच; बिन्दु प्रकाशन इन्दौर, 1981
- कथक नृत्य – लक्ष्मी नारायण गर्ग; संगीत कार्यालय हाथरस, 1981

- Indian Music and Enchantinc Amalgam of Dance – Vasanthy Rao; Sanjay Prakash New Delhi, 2006
- कथक के प्राचीन नृतांग – गीता रघुवीर; Publication Scheme Jaipur, 2000.
- कथक नृत्य शैली में प्रयुक्त गायन की विभिन्न विधाएँ – डॉ0 आम्रपाली त्रिवेदी; अनुभव पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली, 2016
- कथक सौन्दर्यात्मक शास्त्रीय नृत्य गहन अध्ययन एवं चिन्तन – शिखा खरे; कनिष्क पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली–2005.
- Basic Concepts of Indian Dance – Projesh Banerjee: Chaukhambha Orientalia Publisher Delhi, 1984.

'kk/k & çcU/k ½&

- "शास्त्रीय नृत्य कथक एवं समकालीन नृत्य के आहार्य अभिनय का तुलनात्मक अध्ययन एवं नवीन प्रयोग" – अजय कुमार सावाने (शकुन्तला नगर) कुरुक्षेत्र विश्व विद्यालय, कुरुक्षेत्र, 1998
- "कथक नृत्य पर पश्चिमी देशों की नृत्य शैलियों का प्रभाव" – माधुरी शर्मा (इना शास्त्री भावना ग्रोवर) वनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान, 2015
- "20वीं शताब्दी में नृत्य कला को बीकानेर समभाग का अवदान लोक नृत्य कथक एवं भाव नृत्य के संदर्भ में" – चंद्र शेखर सन्वारिया (इना शास्त्री व सुजीत देवधारिया) वनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान, 2018
- "Kathak Nritya Goudiya Vaishnab Bhab dhara Ebang Sukshmachitrakalase Probhab"- Sucharita Datta (Mahua Mukherjee) Rabindra Bharati University, Kolkata, 2016
- "Sociology of dance – a case study of Khathak dance in Pune City"- Chetana Desai (U B Bhoite), Savitribai Phule Pune University, Pune, 2009
- "Khathak Nrityakan Jivan Kushalycha Vikas Vishaleshanatmak Adhyayan" – Vidula Rajendra Kudekar (Guru Sharma Bhate) Tilak Maharashtra Vidyapeeth, Pune, 2018.

'kk/k i= %&

- "अष्टनायिका के कुछ कवित्त कथक नृत्य में प्रस्तुतिकरण हेतु"– श्रीमती राजेश्वरी वाय; संगीत कला विहार, गंधर्व निकेतन महाराष्ट्र –Vol 62. No. 7-12 Aug. 2009, Page 31-35
- "मुगलकाल में कथक नृत्य के विकास में साहित्य का योगदान" – श्रीमती मिकी वर्मा; संगीत, संगीत कार्यालय हाथरस – Vol 74. No. 7- 12 Nov. 2008, Page 3 – 9
- "कथक नृत्य में सृजनात्मकता" – श्रीमती मिकी वर्मा; संगीत, संगीत कार्यालय हाथरस – Vol 74. No. 7- 12 Aug. 2008, Page 27 – 36
- "कथक नृत्य में भाव निरूपण" – राजश्री शाह; संगीत कला विहार, महाराष्ट्र – Vol 65. No. 1- 6 Jan. 2012, Page 16 – 17.
- "भारत की शास्त्रीय एकल एवं समूह नृत्य परम्परा – एक विचार" – राजश्री शाह; संगीत कला विहार, महाराष्ट्र – Vol 64. No. 1- 6, March 2011, Page 45 – 46
- "नृत्य कला की उत्पत्ति" – डॉ0 भगवान दास माणिक; संगीत कला विहार, महाराष्ट्र – Vol 64. No. 1- 6, September 2011, Page 30 – 34

उपर्युक्त सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण करने के बाद यह ज्ञात होता है कि सम्पूर्ण सम्बन्धित साहित्य में कथक एवं बैले नृत्य समूहों का विवरण पृथक–पृथक तो प्राप्त होता है किन्तु dFkd&cSyS पर सामग्री आंशिक रूप से विद्यमान है, जो कि प्रस्तावित शोध–प्रबन्ध हेतु प्रासंगिक नहीं है।

कथक नृत्य के सामूहिक पक्ष पर एक पुस्तक "Indian Ballet Dancing – Projesh Banerjee" तो प्राप्त होती है किन्तु इसमें कथक एवं बैले के ऐतिहासिक पक्ष को ही उजागर करती है जो कि प्रस्तावित शोध के लिये आंशिक रूप से ही लाभप्रद है।

कथक एवं बैले पर आधारित एक पुस्तक "कथक नृत्य शिक्षा भाग 1 एवं 2 – डॉ पुरू दाधीच" में दोनों ही शैलियों के उल्लेख तो प्राप्त होते हैं किन्तु नृत्य–नाटिका एवं कथा संयोजन को लेकर संगीतात्मक विश्लेषण, स्वरलिपि बद्ध रचनाएं व सुगठित सांगीतिक संवादों का विवरण नगण्य है। इसी प्रकार शोध प्रबन्धों में भी कथक एवं बैले को अलग अलग ही स्पष्ट किया गया है। दोनों नृत्य शैलियों के समन्वयात्मक रूप पर कोई न्यायसंगत प्रमाण प्राप्त नहीं होते।

शोध पत्रों में कथक नृत्य पर तो यत्र–तत्र प्राप्त होते हैं किन्तु इनमें बैले नृत्य का वर्णन कहीं नहीं है। जिन शोध पत्रों में कथक पर चर्चा है उनमें बैले का कहीं भी इंगित नहीं किया गया है और जो शोध पत्र बैले के दृष्टिकोण से उल्लिखित हैं उमें कथक पर कोई चर्चा नहीं है। आश्चर्य है कि dFkd&cSys जैसी सशक्त समूह–नृत्य शैली के संगीतात्मक पक्ष पर किसी का ध्यान आकृष्ट नहीं हुआ।

अतः dFkd&cSys समूह नृत्य शैली को जानने के लिए, इसके ऐतिहासिक पक्ष का अध्ययन करने के लिये, दोनों नृत्य शैलियों के सामन्जस्य प्रधान कला पक्ष का गहन अध्ययन करने के लिये, इस शैली में प्रयुक्त राग प्रधान रचनाओं का सूक्ष्म निरीक्षण करने के लिए, सांगीतिक कथाओं को उजागर करने की दृष्टि से निम्नलिखित विषय का चयन किया गया है :–

fo"k; dFku %&

ßlaxhrkRed ^dFkd&cSys* 'kSyh dk fo'ys"k.kkRed v/;;uÞ

v/;;u dh vko';drk %&

संगीत, नृत्य तथा नाट्यकला की धनी "कथक–बैले" शैली अत्यन्त समृद्ध होते हुए भी शिक्षा के क्षेत्र में लाने की आवश्यकता है। इस शैली में निहित गायन, वादन तथा नृत्य प्रधान बंदिशों, कलात्मक कथा संयोजन तथा भाव–प्रस्तुतियों को शोध परक सूक्ष्म दृष्टि से उज़ागर करने की आवश्यकता है।

mnns'; %&

eq[; mnns'; %&

- ßdFkd&cSysÞ शैली के संगीत प्रधान समन्वयात्मक रूप को प्रकाश में लाना।
- ßdFkd&cSysÞ समूह नृत्य–शैली का शोध प्रधान तत्त्वों से सूक्ष्म निरीक्षण करना।

xkS.k mnns'; %&

- ßdFkd&cSysÞ समूह–शैली का इतिहास एवं द्विसांस्कृतिक अवयवों को प्रकाश में लाना।
- ßdFkd&cSysÞ शैली में प्रयुक्त गायन–शैलियों का अध्ययन।
- ßdFkd&cSysÞ शैली में कथक नृत्य के सांगीतिक पक्ष एवं वाद्य–प्रयोग को सूक्ष्मता से निरीक्षित करना।

- ßdFkd&cSyÞ में प्रयुक्त कथा–संयोजन का तात्विक दृष्टि से निरीक्षण करना।
- विभिन्न समूह नृत्यों से कथक–बैले नृत्य की तुलना करना।
- सांगीतिक रचनाओं की साहित्यिक पृष्ठभूमि को खोजना।
- dFkd&cSys में निहित सांगीतिक बंदिशों का राग–प्रयोग, ताल–प्रयोग, पद–संचालन व मुद्राओं की दृष्टि से निरीक्षण करना।
- विभिन्न कलाकारों से साक्षात्कार प्राप्त करना एवं मंचित रचनाओं का कथा एवं संगीतात्मक दृष्टि से संकलन करना।

fo"k; dk ifjlheku &

कार्य एवं समय की सीमा को देखते हुए प्रस्तावित शोध अध्ययन को केवल चार संगीतात्मक ßdFkd&cSyÞ तक ही परिसीमित किया जाएगा।

dk;Z fof/k ,oa midj.k ¼&

प्रस्तावित शोध हेतु सर्वेक्षणात्मक व व्याख्यात्मक प्रविधियों का प्रयोग किया जाएगा तथा विभिन्न पुस्तकालयों, संस्थाओं तथा अकादमियों से सामग्री प्राप्त की जाएगी। इस क्षेत्र के कलाकारों, विद्वानों, कथा–लेखकों द्वारा साक्षात्कार के आधार पर जानकारी प्राप्त की जाएगी। रेडियो, टी0 वी0 व इंटरनेट के माध्यम से भी सूचनाएँ एकत्रित की जाएंगी।

शोध उपकरणों में प्रश्नावली, अनुसूची, निर्धारण मापनी का प्रयोग किया जाएगा तथा अन्य उपकरणों जैसे – सी0 डी0, वीडियो कैमरा, कम्प्यूटर का प्रयोग किया जाएगा।

v/;k;ksa dk foHkktu &

çFke v/;k; &

(i) कथक नृत्य का ऐतिहासिक परिचय

(ii) बैले नृत्य का ऐतिहासिक परिचय

f}rh; v/;k; &

dFkd&cys समूह नृत्य शैली – इतिहास, सांगीतिक विकास व विविध आधुनिक कलात्मक परिप्रेक्ष्य

r`rh; v/;k; &

dFkd&cys – संगीतात्मक कथा संयोजन प्रधान विश्लेषण– साहित्य की दृष्टि से

prqFkZ v/;k; &

dFkd&cys – संगीतात्मक कथा संयोजन प्रधान विश्लेषण – संगीत की दृष्टि से

iape v/;k; &

dFkd&cys में निहित गायन एवं वादन प्रधान रचनाओं का स्वरलिपिबद्ध संकलन

fu"d"kZ

lanHkZ xzUFk lwph

****

I inHk xUFk I ph

iLrd %&

1- Goswami, Indira – Pattanaik, Prakash (2001) Indian Folklore, B. R. Publishing Corporation, New Delhi.

2- नागपाल, अलका (1996), भारतीय संगीत में शोध–प्रविधि, राधा पब्लिकेशन, नई दिल्ली

3- रघुवीर, गीता (2000), कथक के प्राचीन नृतांग, Publication Scheme Jaipur.

4- Banerjee, Projesh (1983), Indian Ballet Dancing –Shakti Malik Abhinav Publication, New Delhi,

5- भार्गव, डॉ० अंजना (2002), भारतीय संगीत शास्त्रों में वाद्यों का चिंतन, कनिष्का पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर, नई दिल्ली

6- दाधीच, डॉ० पुरू, (1981), कथक नृत्य शिक्षा – भाग 1 एवं 2 – बिन्दु प्रकाशन, इन्दौर

7- बृहस्पति, आचार्य (1986), नाट्यशास्त्र का 28वां अध्याय स्वराध्याय, बृहस्पति पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली

8- गर्ग, लक्ष्मी नारायण (1981) कथक नृत्य, संगीत कार्यालय, हाथरस

9- मिश्र, डॉ० ब्रजवल्लभ (1997), भरतमुनि प्रणीतं नाट्यशास्त्रम् हिन्दी अनुवाद सहित, सिद्धार्थ पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली

10- Rao, Vasanthy (2006), Indian Music and Enchantinc Amalgam of Dance, Sanjay Prakash New Delhi.

11- Haroon, Mohammad (1996), Research Methodology For Music, Indian Bibliographies Bureau, Delhi

12- त्रिवेदी, डॉ० आम्रपाली (2016), कथक नृत्य शैली में प्रयुक्त गायन की विभिन्न विधाएँ, अनुभव पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली

13- खरे, शिखा (2005), कथक सौन्दर्यात्मक शास्त्रीय नृत्य गहन अध्ययन एवं चिन्तन, कनिष्क पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली

14- Banerjee, Projesh (1984), Basic Concepts of Indian Dance, Chaukhambha Orientalia Publisher Delhi.

'kks/k & çcU/k

- "शास्त्रीय नृत्य कथक एवं समकालीन नृत्य के आहार्य अभिनय का तुलनात्मक अध्ययन एवं नवीन प्रयोग" – अजय कुमार सावाने; कुरुक्षेत्र विश्व विद्यालय, कुरुक्षेत्र, 1998
- "कथक नृत्य पर पश्चिमी देशों की नृत्य शैलियों का प्रभाव" – माधुरी शर्मा; वनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान, 2015
- "20वीं शताब्दी में नृत्य कला को बीकानेर समभाग का अवदान लोक नृत्य कथक एवं भाव नृत्य के संदर्भ में"; चंद्र शेखर सन्वारिया;वनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान, 2018
- "Kathak Nritya Goudiya Vaishnab Bhab dhara Ebang Sukshmachitrakalase Probhab" - Sucharita Datta, Rabindra Bharati University, Kolkata, 2016
- "Sociology of dance – a case study of Khathak dance in Pune City" - Chetana Desai; Savitribai Phule Pune University, Pune, 2009
- "Khathak Nrityakan Jivan Kushalycha Vikas Vishaleshanatmak Adhyayan" - Vidula Rajendra Kudekar; Tilak Maharashtra Vidyapeeth, Pune, 2018

'kks/k&i= %&

- "अष्टनायिका के कुछ कक्ति कथक नृत्य में प्रस्तुतिकरण हेतु"– श्रीमती राजेश्वारी वाय; संगीत कला विहार , गंधर्व निकेतन महाराष्ट्र –Vol 62. No. 7-12 Aug. 2009, Page 31-35
- "मुगलकाल में कथक नृत्य के विकास में साहित्य का योगदान" – श्रीमती मिकी वर्मा; संगीत, संगीत कार्यालय हाथरस – Vol 74. No. 7- 12 Nov. 2008, Page 3 – 9
- "कथक नृत्य में सृजनात्मकता" – श्रीमती मिकी वर्मा; संगीत, संगीत कार्यालय हाथरस – Vol 74. No. 7- 12 Aug. 2008, Page 27 – 36
- "कथक नृत्य में भाव निरूपण" – राजश्री शाह; संगीत कला विहार, महाराष्ट्र – Vol 65. No. 1- 6 Jan. 2012, Page 16 – 17.

- “भारत की शास्त्रीय एकल एवं समूह नृत्य परम्परा – एक विचार” – राजश्री शाह; संगीत कला विहार, महाराष्ट्र – Vol 64. No. 1- 6, March 2011, Page 45 – 46
- “नृत्य कला की उत्पत्ति” – डॉ0 भगवान दास माणिक; संगीत कला विहार, महाराष्ट्र – Vol 64. No. 1- 6, September 2011, Page 30 – 34